Target Hssc Haryana vikash poonia

नोबेल पुरस्कार 2021

नोबेल प्राइज 2021- इतिहास और पुरस्कार की रोचक कहानी.
अल्फ्रेड नोबेल की अनोखी जीवनी

बात है आज से ठीक 133 साल पहले यानी 1888 की। अल्फ्रेड नोबेल ने एक न्यूज पेपर में अपना नाम ऑबिच्युरी वाले पेज पर देख लिया यानी जिसपर लोगों की मृत्यु से जुड़े समाचार या विज्ञापन होते हैं। उसमें लिखा था कि डायनामाइट किंग एंड मर्चेंट ऑफ डेथ इज डेड अर्थात डायनाइट राजा और मौत के सौदागर की मृत्यु हो गई है। वो हैरान और परेशान हो गए और जब तक कुछ करते तब तक यानी अगले दिन अखबार ने अपनी गलती मानते हुए पाठकों से माफी मांग ली। दरअसल मृत्यु उनके भाई

लुडविग की हार्ट अटैक से हुई थी जिसे नाम में एकरूपता की वजह से उनकी मृत्यु समझ लिया गया था। लेकिन तब बात आई-गई नहीं हो गई क्योंकि अल्फ्रेड नोबेल को इस घटना ने भीतर तक झकझोर दिया।

– अपने मरने की खबर पढ़कर नोबेल डर गये, घंटों मरने के ख्याल में ही खोये रहे, कुछ था जो उन्हें झकझोर रहा था, दरअसल वो इस सोच में डूब गये कि वाकई
– “कल को जब वो नहीं रहेंगे तो लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे, किस रूप में उन्हें याद करेंगे, याद करेंगे भी या नहीं”
– “जब लोग एक दिन मृतकों के नाम वाले पेज पर उनका नाम पढ़ेंगे तो क्या सोचेंगे कि… डायनामाइट वाला मर गया, मौत का सौदागर चल बसा या फिर कहेंगे कि चलो मौत का व्यापारी भी गया”
– “क्या दुनिया इसी नाम से, इसी उपमा से और इसी पहचान से हमें जानेगी । नहीं मैं ऐसा नहीं

होने दूंगा, मैं कम से कम इस तरह से याद रहने वाला नहीं बनूंगा”.... और उन्होंने फैसला लिया कि अब शांति के लिए काम करूंगा”
इस घटना ने उन्हें अपना पुनर्मूल्यांकन करने पर मजबूर किया और उनकी अंतरात्मा को हिला कर रख दिया। बस यही वो टर्निंग प्वाइंट था जहां से एक नये, रचनात्मक और कालजयी विचार ने जन्म लिया। हम इस घटना की सत्यता की पुष्टि तो नहीं करते लेकिन ऐसी ही कुछ घटनाओं के बाद उन्होंने अपनी फाइनल वसीयत लिखी, इससे पहले वो कई वसीयत लिख चुके थे। **1895** उन्होंने अपनी आखिरी वसीयत यानी **WILL** में जो लिखा वो आज भी एक जिंदा सच के रूप में सामने है।

वसीयत में उन्होंने लिखा....
“मेरी मृत्यु के बाद मेरी धन-संपत्ति को सुरक्षित ऋणपत्रों यानी सिक्योरिटी बॉण्ड्स में जमा किया जाये और उससे मिलने वाले ब्याज से हर साल मानवता की भलाई के लिए नई खोज करने

वाले पांच विषयों के विश्व स्तरीय विद्धानों को पुरस्कार दिये जायें। मेरी **94** प्रतिशत से ज़्यादा संपत्ति के मलिक वो लोग है जिन्होंने मानव जाति के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उत्तम कार्य किया है। उम्मीदवारों की राष्ट्रीयता पर कोई विचार नहीं किया जाना चाहिए और सबसे योग्य को पुरस्कार प्राप्त हो, चाहे वह स्कैंडिनेवियाई हो या नहीं।”
उत्तरी यूरोप में आने वाले देशों को स्कैंडिनेवियाई देश कहते हैं इनमें नॉर्वे, स्वीडन, डेनमार्क, फिनलैंड और आइसलैंड हैं।

———-

दरअसल, डायनामाइट और जिलेटिन के अविष्कार के वक्त नोबेल ने सोचा था कि इसके विनाश को देखकर लोग डर जाएंगे और कभी युद्ध नहीं करेंगे। डायनामाइट दुनिया में शांति के लिए होने वाले हजारों सम्मेलनों से भी जल्दी शांति ला देगा। उनकी इस इच्छा की पुष्टि उसकी एक मित्र लेखिका और एंटी वॉर एक्टिविस्य **Bertha von Suttner** ने अपने

फ्रेंच नॉवेल **Die Waffen nieder!** या अंग्रेजी में बोलें तो **Lay Down Your Arms!** में की है। लेकिन हुआ इसका उल्टा। युद्ध तो रुके नहीं बल्कि इसका उपयोग दुश्मन को बर्बाद करने के लिए युद्ध में भी होने लगा। ये देखकर नोबेल को बहुत दुख हुआ और वो अपने अविष्कार के भविष्य में और भी घातक उपयोग को लेकर चिंतित हो उठे थे। तब से उनके मन में कहीं न कहीं ये बात थी और वो इस दिशा में कुछ करने की सोच रहे थे। न्यूज पेपर में अपनी मृत्यु की झूठी खबर के उपजे विचार ने नोबेल पुरस्कार की शुरुआत करवाई, जो आज **120** साल बाद भी जारी है। इस तरह एक पश्चाताप के प्रायश्चित के रूप में शुरु हुए नोबेल पुरस्कार।

अल्फ्रेड बर्नेहार्ड नोबेल:

अल्फ्रेड नोबेल सिर्फ एक रसायन विज्ञानी और इंजीनियर नहीं थे बल्कि बहुमुखी प्रतिभा वाले थे।

उन्होंने कविताएं और नाटक तो लिखे ही अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच और जर्मन भाषा भी सीखी।
एक और खास बात कि स्कूल-कॉलेज की बजाय उन्होंने ज्यादातर पढ़ाई-लिखाई घर से की।
अविष्कारों से उन्हें अपार धन-दौलत मिली और वो **100** फैक्ट्रियों के मालिक भी बन गये थे।
जगह-जगह घूमना, नई जानकारियां जुटाना और कुछ नया करना उनके शौक थे।

———-

नोबेल पुरस्कार की शुरूआत:-
उन्नीसवीं सदी के पहले साल यानी **1901** से नोबेल पुरस्कार शुरू हो गये। नोबेल पुरस्कार शरीर क्रिया विज्ञान या चिकित्सा, रसायन, भौतिकी और आदर्शवादी साहित्य और विश्व शांति शुरु हुआ? यही वह विषय भी हैं जिनका अध्य्यन नोबेल ने घर पर रहकर किया। **1969** में इसमें अर्थशास्त्र भी जुड़ गया और अब तक करीब **970** लोगो को **610** पुरस्कार मिल चुके हैं।

नोबेल पुरस्कार जीतने वाले भारतीय 👇

रवीन्द्र नाथ टैगोर (Rabindranath Tagore) – 1913

रवीन्द्र नाथ टैगोर को नोबेल पुरस्कार **1913** में साहित्य के लिए दिया गया था। रविन्द्र नाथ का जन्म **7** मई **1861** में हुआ था। वह मुख्य रुप से कवि, संगीतकार, गीतकार, कहानीकार, चित्रकार, नाटककार और निबंधकार के रुप में जाने जाते है। रवीन्द्र नाथ को यह पुरस्कार उनके कविताओं की किताब गीतांजली के लिए दिया गया था।

चन्द्रशेखर वेंकट रमन (Sir Chandrasekhara Venkata Raman) – 1930

सर वेंकट रमन वह पहले भारतीय है जिन्हे भौतिक शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया था। तमिलनाडु में जन्मे इस महान पुरुष को यह पुरस्कार **1930** में मिला था। वेंकट रमन को उनके विज्ञान जगत के आविष्कार जिसे हम

रमन इफेक्ट से जानते है उनके लिए दिया गया था।

हर गोविन्द खुराना (Har Gobind Khorana) -1968

हर गोविन्द खुराना को नोबेल पुरस्कार चिकित्सा के क्षेत्र में मिला था। इन्होने इलेक्ट्रॉन पर काम किया था और जेनेटिक कोड की व्याख्या और प्रोटिन संश्लेषण में इसकी भूमिका का पता लगाया था जिस वजह से उन्हे इस महान पुरस्कार से नवाजा गया था।

मदर टेरेसा (Mother Teresa) – 1979

मेसिडोनिया में जन्मी इस महान नारी ने अपना पूरा जीवन कलकत्ता में गरीबो की देख भाल में लगा दिया। गरीबी हटाने के लिए उन्होने मिशन ऑफ चैरेटि की स्थापना की। इतना ही नही उन्होने कुष्ठ रोगियो और ड्रग्स के लत के शिकार बने लोगो के लिए निर्मल हृदय नामक

संस्था की भी स्थापना की थी। साल **1979** में उन्हे शान्ति के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया था।

सुब्रमण्यम चन्द्रशेखर (Subrahmanyan Chandrasekhar) – 1983

सुब्रमण्यम चन्द्रशेकर, वेंकट रमन के भतीजे थे, उन्होने अपनी शिक्षा चेन्नई के प्रेसिडेंसी कॉलेज से पूरी की और फिर बाद में अमेरिका चले गए, वहाँ जाकर उन्होने सौरमण्डल और खगोलीय भौतिक शास्त्र सम्बंधित विषयों के बारे में अनेक किताब लिखी। उन्हे साल **1983** में भौतिक शास्त्र में नोबेल पुरस्कारसे नवाजा गया था।

अमर्त्य सेन (Amartya Sen) – 1998

अमर्त्य सेन का जन्म पश्चिम बंगाल में **1933** में हुआ था, इन्होने अपनी शिक्षा बंगलादेश की राजधानी ढाका से पूरी की थी। इन्होने देश एवं विदेश अनेक कॉलेजो में पढाया है और साथ ही साथ विकास और कल्याण पक्षो पर अनेक पुष्तकें लिखी। केवल भारत के नही बल्कि पूरे

एशियाई देशो में अमर्त्य सेन वह पहले इन्सान है जिन्हे अर्थशास्त्र के लिए **1998** में नोबेल पुरस्कार दिया गया था।

वी एस नायपॉल (VS Naipaul) – 2001

वी एस नायपॉल का जन्म भले ही ट्रिनिदाद में हुआ था लेकिन वह मूल निवासी भारत के थे। बाद में वे ब्रिटेन चले गये और वही की नागरिकता ले ली। नोबेल पुरस्कार से पहले उन्हे ब्रुकर प्राइज और फिर **1990** में ब्रिट्रेन की सरकार नें उन्हे नाइटहुड से सम्मानित किया। साल **2001** में उन्हे साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया था।

राजेन्द्र कुमार पचौरी (Rajendra Kumar Pachauri)- 2007

आर के पचौरी को नोबेल पुरस्कार साल **2007** में जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में मिला था। दरअसल उनका रिसर्च जलवायु परिवर्तन पर था और

2007 में संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन की कमेटी के साथ संयुक्त रुप से इस पुरस्कार से नवाजा गया था।

वेंकट रामाकृष्णन (Venkatraman Ramakrishnan)- 2009

वेंकट रामाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु में **1952** मे हुआ था, यह पढे लिखे घर से ताल्लुक रखते है। उन्हे राइबोजोम की संरचना और उसके कार्यप्रणाली के शोध में रसायन विज्ञान में साल **2009** में नोबेल पुरस्कार मिला।

कैलाश सत्यार्थी (Kailash Satyarthi)- 2014

कैलास सत्यार्थी को बाल मजदूर के उन्मोलन और बच्चो के शिक्षा के अधिकार के लिए साल **2014** में नोबेल पुरस्कार मिला था। सत्यार्थी अपनी इन्जीनियरिंग की पढाई पूरी करके शिक्षा

के क्षेत्र से जुड़ गए। उन्होने छोटे बच्चो के बाल मजदूरी और बंधुआ मजदूरो के लिए आवाज उठाई थी।

अभिजीत बनर्जी (Abhijit Vinayak Banerjee) – 2019

साल **1961** में जन्मे अभिजीत बनर्जी ने अपनी शिक्षा कलकत्ता यूनिवर्सिटी और जेएनयू से पूरी की फिर बाद में वह हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से पीएचडी की। उन्हे **2019** में गरीबी हटाने के क्षेत्र में काम करने के लिए नोबेल पुरस्कार मिला, इतना ही नही यह पुरस्कार उनके साथ साथ उनकी पत्नी को भी मिला है। इसी के साथ नोबेल पुरस्कार जीतने वाले वह दशवें भारतीय बन चुके है।

2021 का नोबेल पुरस्कार👇

नोबेल पुरस्कार - 2021

क्षेत्र	प्राप्तकर्त्ता	योगदान
रसायन विज्ञान	बेंजामिन लिस्ट और डेविड डब्ल्यू. सी. मैकमिलन	अणुओं के निर्माण के लिए सरल और पर्यावरण की दृष्टि से स्वच्छ निर्मित करना, जिसका उपयोग दवाओं और कीटनाशकों सहित बनाने के लिए किया जा सके।
भौतिकी	स्युकुरो मनाबे, क्लॉस हेसलमैन और जियोर्जियो पैरिसी	जटिल भौतिक प्रणालियों की समझ में अद्वितीय योगदान प्रदान
चिकित्सा	डेविड जूलियस और अर्डेम पटापाउटियन	इन्होंने सोमाटोसेंसेशन यानी आँख, कान एवं त्वचा जैसे विशेष देखने, सुनने और महसूस करने की क्षमता पर अध्ययन किया है
शांति पुरस्कार	मारिया रसा और दिमित्री मुरातोव	उन्हें यह पुरस्कार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करने के प्रया प्रदान किया गया जो लोकतंत्र और स्थायी शांति के लिए एक पू शर्त है।
साहित्य	अब्दुल रजाक गुरनाह	उपनिवेशवाद के प्रभावों, संस्कृतियों और महाद्वीपों के बीच की शरणार्थी के भाग्य हेतु अडिग और करुणामय पैठ के लिए प्रदान है।
अर्थशास्त्र	डेविड कार्ड, जोशुआ डी एंग्रिस्ट और गुइडो डब्ल्यू इम्बेंस	मज़दूरी और नौकरियों से संबंधित शोध अध्ययन के लिए प्रदान है।

Telegram-	Click Here

Wabsite	**Click Here**
Twitter🐦🐦	**Click Here**